**Treatment of Learning Disability**

अधिगम निर्योग्यता के उपचार

अधिगम निर्योग्यता के उपचार हेतु निम्न दो विधियों का उपयोग किया जाता है। 1) व्यावहारिक निर्देशन विधि। 2) संज्ञात्मक व्यवहार परिमार्जन।
1)    व्यवहारिक निर्देशन विधि -- इस विधि को स्टेशंस द्वारा 1970 में व्यवहारिक निर्देशन का उपयोग बच्चों के शैक्षिक वातावरण को सही दिशा निर्देश देने के लिए किया गया था । इस विधि का उपयोग चार चरणों में   किया गया जो निम्न है पहला उस ।व्यवहार को लक्ष्य बनाना जिसका परिमार्जन करना है। उदाहरण  - व्यवहारात्मक ,संज्ञात्मक और संवेदात्मक।  दूसरा -लक्ष्य केंद्रित व्यवहार का प्रत्यक्ष और बार-बार मापन करना। उदाहरण  -संज्ञानात्मक के लिए टेस्ट लेना।,  संवेदात्मक के लिए व्यवहार को देखकर शैक्षणिक में पढ़ाई लिखाई को देखकर तीसरा वास्तविक व्यवहार को दूर करने में आने वाली बाधाओं को दूर करना। व्यवहारों में होने वाले परिवर्तनों को समय-समय पर स्थान स्थान पर उपयोग करवाना।  इस विधि के प्रयोग के समय हम बच्चों को समय-समय पर प्रोत्साहित करेंगे प्रोत्साहित करने का माध्यम पुरस्कार शाबाशी इत्यादि हो सकता है ।संख्यात्मक व्यवहार परिमार्जन  इस  विधि का प्रयोग डगलस हालान( 1981) हालान ( 1979)  पैरिस एवं मायर्स मेने प्रस्तुत किया गया । इस विधि द्वारा अध्ययन निम्न पक्षों पर बल  देने के लिए दिया गया है । पहला संवेग शीलता को न्यून करना। इस विधि में स्व निर्देशन एवं मॉडल द्वारा इन दोनों विधियों पर  बल दिया गया है। पहला संवेग शीलता को न्यून करना इस विधि में स्व निर्देशन और दूसरा , मॉडल द्वारा इस विधि को प्रस्तुत किया गया है । स्व निर्देशन विधि में बच्चों को जो समझाया जाता है वह उसे अपने शब्दों में व्यक्त करते हैं और उसी को उदाहरण के माध्यम से व्यक्त करते हैं स्व निर्देशन विधि 9 से 12 वर्ष के बच्चों के लिए उपयोगी है जबकि मॉडल विधि 6 से 10 वर्ष के बच्चों के लिए प्रयोग में लाया जाता है
3. लक्ष्योन्मुख व्यवहार पर बल देना-   इसके द्वारा बालकों के व्यवहार में जो परिवर्तन देखा जाता है उस व्यवहार पर बल दिया जाता है जैसे बच्चे कक्षा या घर में उद्दंडता दिखाएं और यह उद्दंडता असहनीय हो तब अभिभावक एवं शिक्षक के द्वारा इस विधि का प्रयोग किया जाता है इस विधि में शिक्षक द्वारा किसी भी कार्य जो उसका लक्ष्य हो उसे इंगित कर उस कार्य को शुरू करते हैं ऐसे बालकों को स्वर निर्देशन के माध्यम से उपचार किया जाना सार्थक माना जाता है यह उपचार 2 घंटे या बच्चे की क्षमता के अनुसार समय निर्धारित किया जाता है तथा अवधि 3 माह या उसे घटाया बढ़ाया भी जा सकता है। 3. गणितीय क्रियाओं के समाधान पर उनमुखता -  सं वयवहार विधि का उपयोग गणित समस्याओं के समाधान हेतु उपयोग किया जाता है इसके अंतर्गत  स्व निर्देशन विधि का प्रयोग किया जाता है जो बच्चों के लिए काफी लाभदायक सिद्ध होती है इसके अलावा मॉडल की उपयोगिता भी लाभदायक होती है।4. अध्ययन शैली पर सकिय बल - कभी-कभी बच्चों में यह देखा जाता है कि उच्चारण के समय शब्द या अक्षर का लोप कर देते हैं ऐसे बच्चों की अधिगम निर्योग्य करते समय तैयारी करनी पड़ती है जैसे अभिलेख तैयार करना उचित प्रशिक्षण प्राप्त   करके इस प्रक्रिया पर बल दिया जाता है 5. लेखन आयामों पर निर्देशन वैरिटेर एवं डामालिया ने बताया है कि लेखन कौशल पर ध्यान केंद्रित करने के लिए चरणबद्ध प्रशिक्षण पर बल दिया गया है तथा स्व निर्देशन विधि  को उपयोगी माना है ।